एम. ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2018 और जनवरी 2019 सत्रों के लिए)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल '3' – दलित साहित्यः विशेष अध्ययन

एम.एच.डी–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

(पृष्ठ 1 से 7 तक)

मॉड्यूल 3 – दलित साहित्य : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.–17 से 20 तक)
सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–17
'भारत की चिंतन परंपराएं और दलित साहित्य'

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोडः : एम.एच.डी.–17/टी.एम. ए/2018– 2019
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 10 **X** 4 **=** 40

(क) ''इत्येषा व्युपशान्तये न रतये मोक्षार्थगर्भाकतिः,
श्रोवणां ग्रहणार्थमन्यमनसां काव्योपचाशत् कृता।
यन्मोक्षात्कृतमन्यदव हि मया तत्काव्यधर्मात् कृतम्,
पातुं तिक्तभिवौषधं मधुयुतं हद्यं कथं स्यादिति ''

(ख) पत्थर का साँप देखकर क्षीराभिषेक करते हैं,
सजीव साँप देखकर पत्थर मारते हैं,
जंगमों को भगा देते हैं,
पत्थर के लिंग को भोग चढ़ाते हैं.....

(ग) ''बहिन सुन! सुन री बहन!
मैंने एक स्वप्न देखा–
चावल, सुपारी, पान, नारियल देखे,
घुंघराली जटा और मोतियों से दाँतवाला एक योगी देखाः
वह भिक्षा के लिए मेरे द्वारा पर आया;
''रूको, रूको जाओ मत,'कहते हुए मैंने पीछाकर
पकड़ लिया उसका हाथ!
चैन्नमल्लिकार्जुन देव के प्रगट होते ही,
हाय खुल गये मेरे नयन!''

(घ) धरहि म थक्कु म जाहि वणे, जहितहि मण परिआण।
सअलु णिरन्तर बोहि–ठिअ, कहिं भव कहिं णिवबाण।
णउ घरे णउ वणें बोहि ठिउ, एहु परिआणहु भेउ।
णिम्मल चित्त–सहावता, करहु अतिकल सेउ।।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिएः 10 **X** 4 **=** 40

(क) ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर भारत की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालें।

(ख) बुद्ध दर्शन में अनात्मवाद के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'चार्वाक दर्शन' की मूल भावना को बताइए।

(घ) तेलुगु की भक्ति साहित्य परंपरा का परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिएः 5 **X** 4 **=** 20

(क) अश्वघोष की कृतियों की साहित्यिक महत्व पर प्रकाश डालिए।

(ख) आर्य वसुबंधु की रचनाओं में व्यक्त विचारों को स्पष्ट करें।

(ग) कन्नड़ के प्रमुख संतों का परिचय दीजिए।

(घ) निर्गुण संतों के काव्य का मुख्य स्वर क्या है? व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी. –18
दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित**)**

सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–18/टी एम ए/2018–19
कुल अंक 100

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 'दस' प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 10 **x** 10 = 100

1. दलित चेतना क्या है? इसके प्रेरणा के स्रोत क्या हैं? वर्णन कीजिए।
2. दलित साहित्य आंदोलन की आधारभूमि पर प्रकाश डालें।
3. जोतिबा फुले द्वारा गठित 'सत्यशोधक समाज' के सिद्धांतों का मूल्यांकन करें।
4. भारतीय जाति–व्यवस्था और उस पर धर्म की मुहर को स्पष्ट करते हुए डॉ. आंबेडकर के विचारों का मूल्यांकन करें।
5. अछूतानन्द के समाज सुधार आंदोलन पर प्रकाश डालिए।
6. हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत' में अभिव्यक्त दलित चेतना को स्पष्ट कीजिए।
7. किसान जीवन में क्रांति लाने हेतु महात्मा फूले द्वारा सुझाए गए महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार कीजिए।
8. स्त्री मुक्ति में 'हिंदू कोड बिल' की क्या भूमिका है– स्पष्ट कीजिए।
9. पेरीयार ई.वी. रामास्वामी नायकर के सामाजिक आंदोलन का मूल्यांकन कीजिए।
10. 'नारायण गुरू धर्म परिपालम योगम' संस्था का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
11. 'दलित' साहित्य के वैचारिक आधार पर एक निबंध लिखिए।
12. दलित साहित्य के लिए अलग सौंदर्यशास्त्र की क्या आवश्यकता है? स्पष्ट कीजिए।
13. दलित साहित्य ने दलित आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया? विवेचना कीजिए।
14. दलित साहित्य में आक्रोश एवं विद्रोह क्यों है? विचार कीजिए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी–19
हिंदी दलित साहित्य का विकास

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित**)**

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–19/टीएमए/2018–19
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्ही दो की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10 **x** 2 = 20

(क) दूसरा सच
वह देखना नहीं चाहती
घर से गया हुआ उसक मर्द
अब कभी वापस लौटकर नहीं आएगा
सच यही है।
घर से गए
उसके आदमी की आँतें
किसी रामपुरिया चाकू से कटी–फटी
किसी कूड़े के ढेर के नजदीक पड़ी होंगी।
या उसका झुलसा चेहरा
और जला हुआ शरीर
किसी नहर/नदी/नाले के पास पड़ा होगा
सच यही है।

(ख) यदि विधान लागू हो जाता कि
तुम्हारे जीवन का कोई मूल्य नहीं।
कोई भी कर सकता है तुम्हारा वध
ले सकता है, तुमसे बेगार
तुम्हारी स्त्री, बहिन और पुत्री के साथ,
कर सकता बलात्कार
जला सकता है घर–बार।
तब, तुम्हारी निष्ठा क्या होती?

(ग) देवताओं और देशभक्त के
अर्ध्यों में, कारखाने बेचकर
पैदा की गई बेरोजगारी के
यज्ञ को कहते हैं जो 'नई क्रान्ति'
नाशपीटों की यह धोखेबाज सेना
इतना भी नहीं जानती
कि मेरिडियन होटलों की बगल से
गुजरने वाली को भी सड़क
'जनपथ' नहीं हो सकती
जनपथ तो उन्हें बनाना है
जिनके हाथ में '50–साल'
आजादी के बाद भी
तख्तियाँ दिया जाना शेष है।।

(घ) निसिदिन मनुस्मृति ये हमको जला रही है,
उपर न उठने देती नीचे गिरा रही है।
हमको बिना मजूरी, बैलों के संग जोते,
गाली व मार उस पर हमको दिला रही है।
लेते बेगार, खाना तक पेट भर न देते,
बच्चे तड़पते भूखे, क्या जुल्म ढा रही है।
ऐ हिन्दू कौम सुन ले, तेरा भला न होगा,

(ड.) ''मनु जलकर खाक हो गया जब अंग्रेज आया।
ज्ञानरूपी माँ ने हमको दूध पिलाया।।
अब तो तुम भी पीछे न रहो।
भाईयों, पूरी तरह जलाकर खाक कर दो मनुवाद।।
हम शिक्षा पाते ही पायेंगे वह सुख।
पढ़ लो मेरा लेख, जोति कहे।।''

2. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 10 **x** 2 = 20

(क) फिर सन्नाटे को चीरती हुई कुछ आवाजें सुनाई दीं। सब लोग चौंककर उन आवाजों को सुनने लगे। रात के दूसरे पहर में जहां लोग गीली आंखें लिए आकाश की ओर निहार रहे थे, वहीं नई पौध की आंखों में परिवर्तन के लिए अटूट विश्वास था। कल तक जो बच्चे जूठन पर लड़ते–झगड़ते थे उनके मन में कुछ कर–गुजरने की चेतना जन्म ले चुकी थी।

(ख) ''आओ भी, मुझे अपने से अलग क्यों समझते हो?'' एक हिम्मती और जाँबाज युवक की संकोचवृत्ति से मेरा दिल पसीज रहा था। एक सजातीय साथी के घर में इतना संकोच! असलियत बता देने के लिए होंठ फड़कने लगे थे, लेकिन रणछोड़ की धमकी का स्मरण हो जाते ही मेरे दाँत खट्टे हो गए थे। आँखों की नमी को मैं अपनी धोती से पोछता जा रहा था।

(ग) मैं दौड़कर उसके पास पहुँच गया। बोलना चाहा, किन्तु गले में से शब्द नहीं निकले तो नहीं ही निकले, इसलिए मैंने इशारे से झुण्ड की ओर अँगुली बताई..... इतने में ही एक गिद्ध उस पुलिसवाले के पास आया। उसने पुलिसवाले को पास बुलाया, फिर कान में कुछ कहा। सौ–सौ के कुछ नोट उसके हाथों में थमाये। पुलिसवाला खाता–खाता मेरे सामने आया। डण्डा उठाया..... झुण्ड आ रहा है मेरे करीब और करीब.....।

(घ) '' वहाँ देखिए.....देखो मेरी बेटी को सूरज उसका और एक कंगन है। उस कंगन को आप ही पहन लीजिए, उस कंगन को देखिए, गौर से देखिए। मेरी बेटी हँस रही है। अजी देखिए आह भरी हवा के झोंके आकाश की साड़ी को स्पर्श करते जा रहे हैं। वो धरती पर उड़ती आ रही है। आप अब उसका कंगन दीजिए कंगन छीनकर आप उसका सुहाग मत उजाड़िये। गंगा की जिंदगी वापस दीजिए। आहा बेटी....देखो अपनी बेटी..... अब तो मेरे उपर भरोसा रखिए....इस तरह बूढ़ा आकाश को आवाज देता है।''

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिए। 10 **x** 4 = 40

(क) 'परिवर्तन की बात' कहानी के माध्यम से वर्चस्ववाद और शोषण की परंपरा को रेखांकित कीजिए।

(ख) दलित कहानी की सोद्देश्यता पर विचार कीजिए।

(ग) दलित कहानी के सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकारों को निर्दिष्ट कर सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

(घ) दलित उत्पीड़न के संदर्भ में स्वानुभूति और सहानुभूति के सवाल को 'आमने–सामने' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

(ड़) 'अपने–अपने पिंजरे' के संरचनागत वैशिष्ट्य को बताइंए।

(च) दलित आत्मकथनों की मुख्य केन्द्र बिंदु पर प्रकाश डालिए।

(छ) डॉ. आंबेडकर के विचारों का दलित समाज पर क्या असर पड़ा? साहित्य में व्यक्त इन विचारों को रेखांकित कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए। 10 **x** 2 = 20

(क) ''घृणा तुम्हे मार सकती है'' कविता पर टिप्पणी लिखिए।

(ख) 'जनपथ' कविता की भाषा पर प्रकाश डालिए।

(ग) दलित कहानी तथा सामान्य कहानी के मुख्य भेद को बताइए।

(घ) दलित स्त्री आत्मकथा के वैशिष्ट पर प्रकाश डालिए।

(ड़) 'प्रेमचंद तथा दलित कहानिकारों की कहानियों में मुख्य अंतर क्या है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

सत्रीय कार्य एम.एच.डी.–20
भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–20 / टीएमए / 2018–19
कुल अंक: 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10 **x** 4 = 40

(क) आज रोम रोम से
ध्वनि गूंजती है और
पोर पोर से पांव फूटते हैं
प्रचलित परिपाटी से हटकर
मैं भागती हूँ–सब ओर एक साथ
विद्रोहिणी बन चीखती हूँ
गूंजती है आवाज सब दिशाओं में
मुझे अनन्त असीम दिगन्त चाहिए
छत का खुला आसमान नहीं
आसमान की खुली छत चाहिए!
मुझे अनन्त आसमान चाहिए!!

(ख) तुम्हीं ने बताया था गुरू
तुमने घाव दिए, दर्द दिया
फिर भी मैंने शाप नहीं, वरदान माना
हे गुरू!
तुम्हारी परम्पराएं अब बहुत दिन तक नहीं चलेंगी
क्योंकि अब एकलव्य कोई नहीं बनेगा
मैं आगाह कर दिया करता हूँ
बनना ही है तो द्रोणाचार्य जैसे गुरू का शिष्य
कोई क्यों बने?
बनना ही है तो डॉ. आंबेडकर का शिष्य बनो
बाईस घंटे उन जैसा पढ़ो
गढ़ो संविधान और कानून।

(ग) घर मे पुरूषाहंकार एक गाल पर थप्पड़ मारता है
तो गली में वर्ण–अधिपत्य
दूसरे गाल पर
मजूरी के पैसे लेने खेत गई
तो वहां आसामी पसीने के साथ
जब मुझे ही लूटने का ताक में था
मुझे लगा कि मैं बीज बनकर धरती में समा जाउं
युगों से पढ़ाई से दूर
हॉस्टल की गोद के करीब होने पर
वहाँ भी
वार्डन की भूखी नजरें झेल नहीं सकने के कारण
लगा कि दूर फेंक दूं।

(घ) उस पार गाँव की अपनी झोपड़ी में
सवर्णों को आग लगाने दो
वे भी जरूर जलेंगे उसमें
इस अग्नि ज्वाला को
फैला दो क्षितिज के उस पार
भले ही हम सब राख हो जाएँ
शूद्र होने से अच्छा है
चलो प्रिये
मैं भी परेशान हूँ इस परकीय संस्कृति को
ओढ़ कर!

2. निम्नलिखित में से चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 10 **X** 4 = 40

(क) दलित साहित्य संबंधी नामदेव ढसाल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'जब मैंने जाति छुपाई' कहानी में अभिव्यक्त जातिभेद की जटिलता को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) दलित साहित्य–आंदोलन में अर्जुन डांगले के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'कवच' कहानी का बाल चरित्र 'गौन्या' के मानसिक द्वंद्व पर विचार कीजिए।

(ड.) गुजराती दलित साहित्य के उद्‌भव एवं विकास पर विचार कीजिए।

(च) डॉ. गुरूचरण सिंह राओ के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालें।

(छ) 'मशालची' के माध्यम से लेखक ने दलित मुक्ति संघर्ष की दिशा और दशा को किस प्रकार उजागर किया है। स्पष्ट कीजिए।

(ज) मराठी दलित आत्मकथनों में 'अक्करमाशी' की विशिष्टता को रेखांकित कीजिए।

(झ) 'जीवन हमारा' के आधार पर दलित जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सरोकारों का विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्ही चार पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए। 5 **X** 4 = 20

1) तेलुगु दलित कविता में व्यक्त विद्रोह का स्वर

2) माँ कविता में अभिव्यक्त दलित स्त्री की कर्मठता

3) 'पड़' कविता में वर्णित जजमानी प्रथा

4) 'बिच्छू' कहानी की शिल्प योजना

5) 'मोची' की गंगा' कहानी का उद्‌देश्य

6) वेबीताई कांवले

7) मशालची उपन्यास के पात्र

8) 'रोटले' की नजर लग गई' कहानी की भाषा

————— X —————